



PROF. KRISHNA MOHAN PATHI

Prof. Krishna Mohan Pathi is a renowned Orthopaedic Surgeon, an astute clinician, a pioneering research worker and an excellent teacher. He is recognised for his pioneering role in Sickle Cell disease particularly in hip joint arthropathy and Trauma management.

2. Born on 1st August, 1939, Prof. Pathi obtained his M.B.B.S. Degree from Utkal University with Distinction and M.S. Degree in Orthopaedic from Patna University in 1966. He went to England in 1972 as a Commonwealth Medical Fellow and worked at Radcliffe Infirmary, Oxford, Liverpool and Birmingham. He got FICS (Fellow of International College of Surgeons) in 1975, FICA (Fellow of International College of Angiology) in 1983, FACS (Fellow of American College of Surgeons) received at Georgia, U.S.A. in 1983 and FAMS (Fellow of National Academy of Medical Science) in 1988.

3. Prof. Pathi has been the Professor and HOD, Orthopaedic Surgery-cum-Principal, V.S.S. Medical College, Burla, Odisha and Superintendent & Principal, M.K.C.G. Medical College, Berhampur, Odisha. He has been an Undergraduate and Postgraduate examiner in most of the Universities in the country. Three students have received Ph.D. degree under his guidance. He has been the Vice-President of Indian Orthopaedic Association (IOA), President of State Chapter of IOA for two terms. He served as State President of Indian Medical Association. He has been the Convener for Eastern Zone of International College of Surgeons for three consecutive years. He is a Member and Member Secretary and/or Chairman of many National and International Surgical Societies.

4. Prof. Pathi's unique work has been to design simple techniques of surgery which could be cost effective and performed with ordinary minimum instruments. His original work on Sickle Cell disease (probably the 1st Orthopaedic Surgeon in India to introduce Muscle Pedicle Bone Graft Surgery in Sickle Cell Arthropathy) and tempero-mandibular ankylosis have been recognised and rewarded at National and International levels. He has gone to various places in the country and abroad not only to present his work but also to demonstrate his technique of operation.

5. Prof. Pathi utilised his professional eminence and reputation to develop the tribal villages (known as Madhapur zone) in the Kukudakhundi Block of Ganjam District, Odisha. He established Bharadwaj Gurukul Ashram (an NGO) for social service 40 years back. Due to his tireless efforts and adamant will in mobilising Government, other NGOs and local people, a jungle has been converted into a hospital complex to deliver modern health care facilities free of cost to the people of surrounding villages. He has been doing this relentlessly for the last four decades.

6. Prof. Pathi received many coveted awards under highly competitive situations at National and International level like- Dr. R.G. Kini Memorial Oration Award of Association of Surgeons of India at Ahmadabad in 1998; Prof. G.S. Dasmohapatro Oration Awarded and Gold Medal of A.S.I. in 1999; Presidential Citation Award at South Asia Pacific Federation Congress at Dhaka, Bangladesh in 1999; Dr. R.G. Ginde Memorial Oration Award of the International College of Surgeons in 2000; Dr. S. Rangachari Research Endowment Award of Association of Surgeons of India in 2002 and Dr. Bidhan Chandra Roy National Award by the then President of India in 2004. In April, 2005, he received the Life Time Achievement Award and a Citation as an Outstanding Orthopaedic Surgeon from the Government of Odisha at the Annual Conference of Indian Medical Association. In 2015, he received D.Sc. (Doctor of Science) from Berhampur University. Hon'ble Governor of Odisha Sri S.C. Jamir decorated him with this award during 20th Convocation of Berhampur University. His innovative work on Temperomandibular Ankylosis has appeared in the Limca Book of Records in 1990.



प्रो. कृष्णा मोहन पाठी

प्रो. कृष्णा मोहन पाठी एक प्रसिद्ध ऑर्थोपेडिक सर्जन, कुशल चिकित्सक, अग्रणी शोधकर्ता और उत्कृष्ट शिक्षक हैं। उन्हें सिकल सेल डिजीज, खास तौर पर हिप ज्वाइंट आर्थ्रोपैथी और ट्रॉमा मैनेजमेंट में अपनी अग्रणी भूमिका के लिए जाना जाता है।

2. 1 अगस्त, 1939 को जन्मे प्रो. पाठी ने उत्कल यूनिवर्सिटी से विशेष योग्यता के साथ एमबीबीएस डिग्री और पटना यूनिवर्सिटी से वर्ष 1966 में ऑर्थोपेडिक में एमएस डिग्री हासिल की। वर्ष 1972 में वह एक कॉमनवेल्थ मेडिकल फेलो के रूप में इंग्लैंड गए और रेडक्लिफ इन्फर्मरी, ऑक्सफोर्ड, लिवरपूल तथा बर्मिंघम में काम किया। उन्हें 1975 में फिक्स (फेलो ऑफ इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ सर्जन्स), 1983 में फिका (फेलो ऑफ इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ एंथिगोलॉजी), 1983 में जॉर्जिया, अमेरिका में फैक्स (फेलो ऑफ अमेरिकन कॉलेज ऑफ सर्जन्स) और 1988 में फैम्स (फेलो ऑफ नेशनल अकेडमी ऑफ मेडिकल साइंस) प्राप्त हुआ।

3. प्रो. पाठी वी.एस.एस. मेडिकल कॉलेज, बुर्ला, ओडिशा के प्रोफेसर और ऑर्थोपेडिक सर्जरी के विभागाध्यक्ष और प्रिंसिपल तथा एम.के.सी.जी. मेडिकल कॉलेज, बरहमपुर, ओडिशा के अधीक्षक व प्रिंसिपल रहे हैं। वह देश के अधिकांश विश्वविद्यालयों में अंडरग्रेजुएट और पोस्टग्रेजुएट परीक्षक रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में तीन विद्यार्थियों ने पीएच.डी डिग्री हासिल की है। वह इंडियन ऑर्थोपेडिक एसोसिएशन (आईओए) के वाइस प्रेसिडेंट, दो कार्यकाल तक आईओए के स्टेट चैप्टर के प्रेसिडेंट रहे हैं। उन्होंने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के स्टेट प्रेसिडेंट के रूप में अपनी सेवाएं दीं। वह लगातार तीन वर्ष तक इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ सर्जन्स के पूर्वी अंचल के संयोजक रहे हैं। वह कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सर्जिकल सोसाइटी के सदस्य और सदस्य सचिव और/या चेयरमैन हैं।

4. प्रो. पाठी का विशिष्ट कार्य सर्जरी की ऐसी सरल तकनीकों को डिजाइन करना रहा है, जो किफायती हों और सामान्य न्यूनतम उपकरणों से की जाएं। सिकल सेल डिजीज (संभवतः सिकल सेल एंथ्रोपैथी में मसल पेडिकल बोन ग्राफ्ट सर्जरी लाने वाले भारत के पहले ऑर्थोपेडिक सर्जन हैं) और टेंपेरो-मेंडीबुलर एंकीलोसिस में उनके मौलिक काम को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर सराहा और पुरस्कृत किया गया है। उन्होंने अपने कार्य और ऑपरेशन की अपनी तकनीक को प्रदर्शित करने के लिए देश-विदेश की यात्राएं की हैं।

5. प्रो. पाठी ने गंजम जिला, ओडिशा के कुकुदाखंडी ब्लॉक में आदिवासी गांवों (मधापुर अंचल के नाम से प्रसिद्ध) को विकसित करने के लिए अपने कार्यकौशल और ख्याति का प्रयोग किया। उन्होंने 40 वर्ष पहले समाज सेवा के लिए भारद्वाज गुरुकुल आश्रम (एक गैर सरकारी संगठन) स्थापित किया। सरकार, दूसरे गैर-सरकारी संगठनों और स्थानीय लोगों को एकजुट करने के उनके अथक प्रयासों और दृढ़ इच्छाशक्ति ने एक जंगल को अस्पताल परिसर में बदल दिया। यह अस्पताल आस-पास के गांवों के लोगों को मुफ्त में आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करता है। वह विगत चार दशक से अनवरत यह कार्य कर रहे हैं।

6. प्रो. पाठी ने अत्यंत प्रतिस्पर्धी स्थितियों में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किए जिनमें वर्ष 1998 में अहमदाबाद में एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इंडिया का डॉ. आर. जी. किनी मेमोरियल ओरेशन अवार्ड, वर्ष 1999 में प्रो.जी.एस.दास मोहापात्रो ओरेशन अवार्ड और एएसआई का स्वर्ण पदक, वर्ष 1999 में ढाका, बांग्लादेश में साउथ एशिया पेसिफिक फेडरेशन कांग्रेस का प्रेसिडेंशियल साइटेशन अवार्ड, वर्ष 2000 में इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ सर्जन्स का डॉ.आर.जी.गिंदे मेमोरियल ओरेशन अवार्ड; वर्ष 2002 में एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इंडिया का डॉ.एस.रंगाचारी रिसर्च एंडोमेंट अवार्ड और वर्ष 2004 में तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा डॉ. बिधान चंद्र राय राष्ट्रीय पुरस्कार शामिल है। अप्रैल, 2005 में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के वार्षिक सम्मेलन में ओडिशा सरकार द्वारा उन्हें एक उल्लेखनीय ऑर्थोपेडिक सर्जन के रूप में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड और एक प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया। वर्ष 2015 में, उन्हें बरहामपुर यूनिवर्सिटी से डॉक्टर ऑफ साइंस की उपाधि प्राप्त हुई। बरहामपुर यूनिवर्सिटी के 20वें दीक्षांत समारोह में ओडिशा के माननीय राज्यपाल श्री एस.सी. जमीर ने उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया। टेंपेरोमेंडीबुलर एंकीलोसिस पर उनके अभिनव कार्य को वर्ष 1990 में लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में स्थान मिला।